

ब्रिटिश काल में मेवात से सम्बंधित मुख्य ग्रंथों का विवरण

श्याम सुंदर¹, डॉ. रेखा रानी²

¹ शोधार्थी, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा-124021

² सहायक प्रोफेसर, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा-124021

सारांश :

ब्रिटिश काल में मेवात का इतिहास प्रतिरोध, संघर्ष और औपनिवेशिक नीतियों का एक महत्वपूर्ण अध्याय रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र का परिचय इस क्षेत्र के सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य, मेव समुदाय के संघर्ष और ब्रिटिशकालीन गजेटियर व रिपोर्ट्स में उनके चित्रण का विश्लेषणात्मक अवलोकन प्रस्तुत करता है। यह शोध औपनिवेशिक आख्यानों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करते हुए मेवात के वास्तविक इतिहास और इतिहास लेखन में आए बदलावों की पड़ताल करता है। 1857 के गदर से लेकर 1947 की आजादी तक का कालखंड मेवात के इतिहास में न केवल संघर्षों का दौर था, बल्कि यह वह समय भी था जब इस क्षेत्र की सामाजिक और राजनीतिक स्थिति को दुनिया के सामने लाने के लिए कई महत्वपूर्ण ग्रंथों और दस्तावेजों की रचना हुई। इस दौर के साहित्य और प्रशासनिक अभिलेखों का अध्ययन करने पर पता चलता है कि मेवात को उस समय किस नजरिए से देखा जा रहा था। जैसे-जैसे 20वीं सदी आगे बढ़ी, मेवात पर लिखे गए ग्रंथों का स्वरूप प्रशासनिक से बदलकर सामाजिक और सुधारवादी होने लगा। इस दिशा में तारीख-ए-मेवात जैसे महत्वपूर्ण कार्य हुए, जिन्होंने यहाँ के वंशानुगत इतिहास और सांस्कृतिक जड़ों को सहेजने का प्रयास किया। तमाम पुस्तकों और अभिलेखों का अध्ययन हमें यह समझने में मदद करता है कि 1857 की क्रांति के बागी मेवात से लेकर 1947 के गांधी के मेवात तक की यात्रा किन वैचारिक और साहित्यिक मोर्चों से होकर गुजरी थी।

परिचय :

भारतीय उपमहाद्वीप में ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण मेव और मेवात अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रासंगिकता के कारण इतिहासकारों की शोध रुचि का विषय रहे हैं। मेवात का क्षेत्र प्राचीन मत्स्य साम्राज्य से मेल खाता है, जो महाभारत के पांडवों का आश्रय स्थल था और उनकी राजधानी विराट नगर, आधुनिक बैराठ थी। मेवाती भाषा इस क्षेत्र की प्रमुख बोली है और हिन्दी, हरियाणवी और राजस्थानी बोलियों का एक रूप है। यह उल्लेखनीय है कि मेवात के अधिकतर हिन्दू निवासी क्षत्रिय जातियों से संबंधित हैं और ऐसा मन जाता है कि मेव भी इस्लाम धर्म में परिवर्तित होने से पहले इन्हीं क्षत्रिय जातियों में से सम्बंधित थे लेकिन उस समय उन्हें मेव नहीं कहा जाता था। इस प्रकार, “मेव” शब्द क्षेत्र-विशिष्ट और धर्म-विशिष्ट दोनों है। मुस्लिम समुदाय से सम्बन्ध रखने वाले यह मेव मेवात के निवासी हैं। मेवात में मेवों का वर्चस्व है और सदियों से मेवात की कृषि भूमि के बड़े हिस्से पर उनका ही कब्जा है। इतिहासकारों ने अपने संबंधित कार्यों में ब्रिटिश काल में मेव और मेवात का विवरण प्रदान किया है, जो उनके ऐतिहासिक संदर्भ में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। तत्कालीन ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा संकलित गजेटियर ऑफ द गुडगांव डिस्ट्रिक्ट, अलवर स्टेट गजेटियर जैसे सरकारी दस्तावेज मेवात के विद्रोही स्वभाव और 1857 की क्रांति में उनकी सक्रिय भागीदारी का विस्तृत, भले ही आलोचनात्मक, खाका खींचते हैं। इसी क्रम में मेजर डब्ल्यू. एफ. टिमलिन के सैन्य वृत्तांत और रिकॉर्ड्स ऑफ द इंटेलिजेंस डिपार्टमेंट जैसे संकलन उस दौर के प्राथमिक स्रोत रहे हैं, जो मुगलों और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध मेवातियों के संगठित प्रतिरोध को दर्ज करते हैं।

ए ग्लोसरी ऑफ द ट्राइब्स एंड कास्ट्स ऑफ द पंजाब एंड नॉर्थ-वेस्ट फ्रंटियर प्रोविंस पुस्तक में मेवात का वर्णन :

डेन्जिल इबटसन एक प्रमुख ब्रिटिश प्रशासनिक अधिकारी, सांख्यिकीविद और नृवंशविज्ञानी थे, जिन्होंने पंजाब के औपनिवेशिक शासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे 1870 में भारतीय सिविल सेवा में शामिल हुए और बाद में पंजाब के उप-राज्यपाल (लेफ्टिनेंट गवर्नर) के पद तक पहुँचे। उनकी सबसे महत्वपूर्ण कार्य 1881 की पंजाब जनगणना और उसके आधार पर लिखी गई उनकी रिपोर्ट है, जो बाद में पंजाब कास्ट्स के नाम से प्रसिद्ध हुई।

मेव समुदाय के भौगोलिक विस्तार के विषय में इबटसन लिखता है कि, “गुडगांव, अलवर और भरतपुर के पहाड़ी इलाकों में पाई जाने वाली एक अत्यधिक मिश्रित जनजाति, और दिल्ली जिले और नाभा के बावल निजामत में भी बिखरी हुई है।”¹ मेवात क्षेत्र और इसकी सीमाओं की जानकारी इबटसन इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इंडिया के आधार पर प्रदान करता है। समकालीन मुस्लिम इतिहासकारों के अनुसार, मेव इस नाम से अज्ञात प्रतीत होते हैं, लेकिन मेवाती पूरे मुस्लिम काल के दौरान कुख्यात थे।² इबटसन मेवों के 52 मूल गोत्रों में 12 पाल का जिक्र करता है। इबटसन ने मेवात को आगे पांच उप क्षेत्रों में विभाजित किया है जिसमें भियाना, अरेज, धंगलवती, नईवाड़ा और पहात-वाड़ा। इनमें से भियाना सबसे कम आबादी वाला और अराजक क्षेत्र है, यानी पलवल, नूह, फिरोजपुर-झिरका और भरतपुर का बांगर (उच्च भूमि) क्षेत्र। अरेज नूह और फिरोजपुर-झिरका तहसीलों का निचला क्षेत्र है, जो गुडगांव जिले की पश्चिमी सीमा बनाने वाली श्रेणी के पूर्वी तलहटी के साथ में लगता है।

गुडगांव डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (1883-84) में मेवात का वर्णन :

गुडगांव डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (1883-84) का संकलन मुख्य रूप से एफ.सी. चौनिंग ने किया, जो उस समय के एक अनुभवी ब्रिटिश प्रशासनिक अधिकारी और लैंड सेटलमेंट ऑफिसर थे। इस गजेटियर को लिखने के पीछे ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की प्रशासनिक और रणनीतिक आवश्यकताएं छिपी थीं। हालांकि चौनिंग ने इसे अंतिम रूप दिया, लेकिन इसमें विल्सन और डेंजिल इबटसन जैसे नृवंशविज्ञानियों के आंकड़ों और शोध का भी व्यापक उपयोग किया गया था। जिसे पंजाब सरकार के निर्देशन में पंजाब गवर्नमेंट प्रेस, लाहौर द्वारा प्रकाशित किया गया था। इसके महत्वपूर्ण दस्तावेज को लिखने के पीछे तीन मुख्य उद्देश्य थे—

राजस्व निर्धारण

ब्रिटिश सरकार का प्राथमिक उद्देश्य मेवात के कृषि संसाधनों, भूमि की उर्वरता और सिंचाई के साधनों का सटीक ब्योरा तैयार करना था। यह इसलिए जरूरी था ताकि सरकार अधिकतम भूमि कर वसूलने के लिए एक वैज्ञानिक आधार तैयार कर सके।

1857 के विद्रोह का प्रभाव

मेवात ने 1857 की क्रांति में ब्रिटिश सत्ता को कड़ी चुनौती दी थी। अंग्रेज यह समझना चाहते थे कि मेवातों का सामाजिक ढांचा कैसा है और वे इतनी एकजुटता से कैसे लड़े। भविष्य में ऐसे विद्रोहों को रोकने के लिए वहां के समुदायों की मानसिकता और भौगोलिक स्थिति (पहाड़ी क्षेत्र) को समझना उनके लिए अनिवार्य था।

जातियों का ज्ञान ही शासन का आधार

औपनिवेशिक विचार यह था कि भारत पर शासन करने के लिए यहाँ की जातियों और धर्मों का गहरा ज्ञान होना चाहिए। इबटसन और चौनिंग का मानना था कि यदि वे मेवातों के पाल और गोत्र के आपसी संबंधों को समझ लेते हैं, तो वे स्थानीय विवादों को सुलझाने और नियंत्रण बनाए रखने में सफल रहेंगे। चौनिंग ने प्रस्तावना में संकेत दिया था कि यह गजेटियर केवल आंकड़ों की सूची नहीं है, बल्कि यह एक प्रशासनिक मार्गदर्शिका है ताकि नए आने वाले ब्रिटिश अधिकारी मेवात की जटिल सामाजिक और राजनीतिक स्थिति को तुरंत समझ सकें।¹

अलवर स्टेट गजेटियर में मेवात का वर्णन :

अलवर स्टेट गजेटियर को मूलतः मेजर पी. डब्ल्यू. पोलेट द्वारा लिखा गया था। पोलेट एक अनुभवी ब्रिटिश सैन्य अधिकारी थे जिन्होंने पॉलिटिकल एजेंट के रूप में अलवर रियासत में लंबे समय तक कार्य किया था। उनको राजपूताना की रियासतों के इतिहास और वहां की स्थानीय जातियों के विशेषज्ञ जाना जाता था। यह गजेटियर पहली बार 1878 में लंदन से टुबनर एंड कंपनी द्वारा प्रकाशित किया गया था। बाद में इसे ब्रिटिश औपनिवेशिक भारत के विभिन्न आधिकारिक सांख्यिकीय आंकड़ों के संकलनों और राजस्व रिपोर्टों (1883-84 के दौरान) का आधार बनाया गया।

अलवर स्टेट गजेटियर (1878-1884), जिसे मेजर पी. डब्ल्यू. पोलेट द्वारा संकलित किया गया था, मेवात के इतिहास के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण दस्तावेज है। यह गजेटियर विशेष रूप से मेवात के उस हिस्से पर केंद्रित है जो अलवर रियासत के अधीन था। ऐतिहासिक दृष्टि से इसका विवरण और ऐतिहासिक महत्व निम्नलिखित है—

खानजादा वंश और मेवात का शासन

पोलेट ने मेवात के पूर्व शासकों, खानजादों की उत्पत्ति पर विस्तार से लिखा है। वह उन्हें यदुवंशी राजपूतों का वंशज बताते हैं जिन्होंने इस्लाम अपना लिया था। उन्होंने मेवातों की वीरता की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि “मेवात के खानजादा शासकों ने सदियों तक दिल्ली के सुल्तानों को चुनौती दी। वे अपनी वीरता और किलों के लिए प्रसिद्ध थे।”⁴

मेवात समुदाय की सैन्य प्रकृति

अलवर गजेटियर में मेवातों को केवल कृषक नहीं, बल्कि एक महत्वपूर्ण राजनीतिक शक्ति के रूप में देखा गया है। पोलेट ने उनके जुझारु स्वभाव का वर्णन किया है। “मेवात हमेशा से ही स्वतंत्र और अशांत रहे हैं। अलवर के राजाओं के लिए उन्हें नियंत्रित करना हमेशा एक बड़ी चुनौती रही है।”⁵

मेवात के भौगोलिक किले और सुरक्षारू पोलेट ने अलवर रियासत के उन किलों (जैसे तिजारा और अलवर किला) का विस्तृत वर्णन किया है जिन्होंने मेवात की सुरक्षा में ऐतिहासिक

भूमिका निभाई।⁶

निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि मेजर पी. डब्ल्यू. पोलेट द्वारा लिखित अलवर स्टेट गजेटियर (1878-1884) मेवात के इतिहास को एक रियासती और सैन्य परिप्रेक्ष्य से समझने का सबसे प्रामाणिक स्रोत है। इस दस्तावेज को तैयार करने का मुख्य उद्देश्य अलवर रियासत के भीतर पॉलिटिकल एजेंट के रूप में प्रशासनिक नियंत्रण स्थापित करना और मेवात की लड़ाकू शक्तियों, विशेष रूप से खानजादा शासकों और मेवातों के राजनीतिक प्रभाव का दस्तावेजीकरण करना था। यह गजेटियर मेवात के किलों, वंशावलियों और रियासती राजनीति के अंतर्संबंधों पर जो प्रकाश डालता है, वह इसे गुडगांव गजेटियर के प्रशासनिक विवरणों से अलग और अधिक ऐतिहासिक गहराई प्रदान करने वाला बनाता है। अंततः, पोलेट का यह कार्य मेवात को केवल एक राजस्व इकाई के रूप में नहीं, बल्कि एक जीवंत राजनीतिक और ऐतिहासिक क्षेत्र के रूप में स्थापित करता है।

एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान पुस्तक में मेवात का वर्णन :

एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान की रचना जेम्स टॉड द्वारा की गयी थी। वो एक ब्रिटिश अधिकारी नहीं थे, बल्कि वे अभिलेखीय इतिहास के प्रति समर्पित एक नृवंशविज्ञानी थे। 1818 में राजपूताना के पॉलिटिकल एजेंट नियुक्त होने के बाद, उन्होंने यति ज्ञानचंद्र⁷ जैसे विद्वानों की सहायता से हजारों प्राचीन पांडुलिपियों, शिलालेखों और वंशावलियों का संग्रह किया। उनकी शोध पद्धति मौखिक परंपराओं और भाट (चारण काव्य) पर आधारित थी। टॉड के लेखन के उद्देश्यों को चार मुख्य हिस्सों में विभाजित किया जा सकता है—

सामंती व्यवस्था का यूरोपीयकरण

टॉड का सबसे बड़ा बौद्धिक उद्देश्य राजपूताना की शजागीरदारीय प्रथा की तुलना मध्यकालीन यूरोपीय फ्यूडल व्यवस्था या सामंतवाद से करना था। उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि राजपूतों की निष्ठा और भूमि अधिकार की व्यवस्था मध्यकालीन यूरोप के नाइट्स वे प्रशिक्षित घुड़सवार सैनिक योद्धा, के समान ही तर्कसंगत और गौरवशाली है।

वंशावली के माध्यम से राजनीतिक वैधता

टॉड ने पौराणिक अग्निपुत्र⁸ और सूर्यवंश व चंद्रवंश की वंशावलियों का संकलन इसलिए किया ताकि वह तत्कालीन राजपूत राजाओं की राजनीतिक सत्ता को ऐतिहासिक वैधता प्रदान कर सकें। मेवात के संदर्भ में, उन्होंने खानजादों को यदुवंशी राजपूतों से जोड़कर उनके स्थानीय शासन को एक ऐतिहासिक निरंतरता के रूप में प्रस्तुत किया।

ओरिएंटलिस्ट विचारधारा और औपनिवेशिक हित

एक ब्रिटिश अधिकारी के रूप में, उनका उद्देश्य ऐसी सूचनाएं एकत्र करना था जिससे ईस्ट इंडिया कंपनी को मराठा प्रभुत्व के बाद राजपूताना में अपनी पकड़ मजबूत करने में मदद मिले। समुदायों के स्वभाव जैसे मेवों का विद्रोही होना को दर्ज करना सामरिक नियंत्रण के लिए आवश्यक था ताकि उनके विरुद्ध किसी भी सैन्य अभियान को उचित ठहराया जा सके।

रोमांटिक इतिहास लेखन

टॉड 19वीं सदी के रोमांटिक स्कूल ऑफ हिस्ट्री से काफी प्रभावित थे। उनका उद्देश्य केवल ऐतिहासिक आंकड़े प्रदान करना नहीं था, बल्कि राजपूतों और मेवात के वीरों (जैसे हसन खान मेवाती) की कहानियों को इस तरह पेश करना था कि वे भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक महाकाव्य बन सकें।

द पॉपुलर रिलिजन एंड फोकलोर ऑफ नॉर्दर्न इंडिया पुस्तक में मेवात का वर्णन :

विलियम क्रूक की किताब द पॉपुलर रिलिजन एंड फोकलोर ऑफ नॉर्दर्न इंडिया में मेवात और यहाँ के लोगो के लोगो के बारे में महत्वपूर्ण विवरण मिलता है। विलियम क्रूक एक ब्रिटिश नृवंशविज्ञानी और आईसीएस अधिकारी थे, जिन्होंने औपनिवेशिक प्रशासनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उत्तर भारत की जातियों और लोक-संस्कृति का गहन दस्तावेजीकरण किया। उनके लेखन का मुख्य उद्देश्य जनगणना के माध्यम से भारतीय समाज को वर्गीकृत करना और स्थानीय रीति-रिवाजों को समझकर शासन व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना था। मेवात के विषय में, उन्होंने मेवों की राजपूत मूल से उत्पत्ति और उनकी मिली जुली सांस्कृतिक पहचान का विश्लेषणात्मक विवरण प्रस्तुत किया, जो आज भी क्षेत्रीय नृवंशविज्ञान के अध्ययन हेतु एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत माना जाता है।

विलियम क्रूक का लेखन मुख्य रूप से मेवों के धर्म और संस्कृति पर केंद्रित है। वह यहाँ के लोगों द्वारा सैय्यद सालार मसूद जो गाजी मियाँ के नाम से प्रसिद्ध, सुल्तान महमूद गजनवी के भांजे थे, इनकी दरगाह उत्तर प्रदेश के बहराइच में स्थित है, की पूजा का वर्णन है। क्रूक बताते हैं कि मेव उन्हें अपना सबसे प्रिय पीर मानते हैं और उनकी दरगाह पर मन्तें मांगते हैं।⁹

इसके अतिरिक्त क्रूक मेव महिलाओं द्वारा किये जाने वाले मुंडन संस्कार का विवरण करता है। उसके अनुसार यहाँ की महिलाएं अपने बच्चों को सालार मसूद की दरगाह पर ले जाती हैं और पहली बार उनके बाल कटवाती हैं। यहाँ उसने मेवों को "आधे हिंदू और आधे मुसलमान"¹⁰ के रूप में परिभाषित किया है। इसके अतिरिक्त उसने मेवों के कुछ विशिष्ट संतों जैसे शाह मदार¹¹ के प्रति उनकी आस्था और उनके गाँवों में लगने वाले धार्मिक मेलों का जिक्र है।

क्रूक ने मेवों के बीच प्रचलित अंधविश्वासों और बुरी नजर से बचने के टोटकों का भी वर्णन किया है। वह लिखता है कि "मेव अपने और बच्चों की रक्षा के लिए प्राचीन प्रतीकों (जादुई चिरागों और ताबीजों) का उपयोग करते हैं, जो सामान्यतः हिन्दू और मुस्लिम दोनों में प्रचलन में थे।"¹²

मेवात क्षेत्र के स्थानीय देवताओं और कुल-देवताओं की सूची दी गई है, जिनकी पूजा मेव मुसलमान होने के बाद भी गुप्त रूप से या स्थानीय रीति से करते थे।¹³ होली का उत्सव के विषय में क्रूक लिखते हैं कि मेव होली मनाते हैं लेकिन उसे मुस्लिम संतों की कथाओं से जोड़ देते हैं।¹⁴

मेवात के विवाह संस्कारों के विषय में क्रूक लिखते हैं कि, मेव निकाह जरूर पढ़ते हैं, लेकिन सगाई और शादी की अन्य रस्में पूरी तरह से हिंदू धर्म के पटोआ और ज्योतिषीय गणना पर आधारित होती हैं।¹⁵ विवाह में ब्राह्मणों की भूमिका के विषय में क्रूक स्पष्ट रूप से लिखते हैं कि मेव शादी के लिए ब्राह्मणों को बुलाते हैं, जो उनके हिंदू मूल का प्रमाण है।¹⁶

निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि विलियम क्रूक की पुस्तक द पॉपुलर रिलिजन एंड फोकलोर ऑफ नॉर्दर्न इंडिया मेवात के सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन को समझने का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत है। क्रूक ने मेवों की परंपराओं, धार्मिक विश्वासों और लोक-रीतियों का विस्तृत वर्णन किया है। उन्होंने बताया कि मेव समुदाय में हिंदू और मुस्लिम दोनों संस्कृतियों का मिला-जुला प्रभाव दिखाई देता

है। पीर, दरगाहों, स्थानीय देवी-देवताओं, मेलों और धार्मिक मान्यताओं के प्रति उनकी आस्था उनके सामाजिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा थी। क्रूक के अनुसार मेवों के रीति-रिवाजों में हिंदू परंपराओं और इस्लामी प्रभावों का अनोखा मेल देखने को मिलता है। विवाह संस्कार, त्योहार और लोक विश्वासों में यह मिश्रित संस्कृति स्पष्ट दिखाई देती है। उनकी पुस्तक से यह ज्ञात होता है कि मेवात की पहचान केवल धर्म के आधार पर नहीं, बल्कि स्थानीय परंपराओं, सामाजिक संबंधों और सांस्कृतिक विरासत से भी बनी थी। इस प्रकार क्रूक का अध्ययन मेवात के इतिहास और लोक संस्कृति को समझने में विशेष महत्व रखता है।

तारीख-ए-मेव क्षत्री पुस्तक में मेवात का वर्णन :

तारीख-ए-मेव क्षत्री के लेखक चौधरी अब्दुल शकूर मेवात के एक जाने माने स्थानीय इतिहासकार, शिक्षक और समाज सुधारक थे। उनका लेखन मुख्य रूप से मेवात की लुप्त होती क्षेत्रीय पहचान और गौरवशाली अतीत को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से प्रेरित था। उन्होंने इस ग्रंथ की रचना इसलिए की ताकि औपनिवेशिक काल के इतिहासकारों द्वारा मेवातियों पर लगाए गए लुटेरे या विद्रोही जैसे अपमानजनक और नकारात्मक टप्पों को तार्किक रूप से चुनौती दी जा सके।

उनके लेखन का एक अन्य प्रमुख कारण मेवात की मौखिक परंपराओं, जैसे शपालों की वंशावली और स्थानीय लोक-गाथाओं को लिखित साक्ष्यों के रूप में संकलित करना था। शकूर ने हसन खां मेवाती के बलिदान और 1857 की क्रांति में मेवातियों की भूमिका को केंद्र में रखकर यह सिद्ध किया कि मेवात का इतिहास भारतीय राष्ट्रवाद और सांप्रदायिक सौहार्द का एक अभिन्न हिस्सा रहा है। तारीख मेव क्षत्री मेवात के इतिहास का वह आधारभूत ऐतिहासिक ग्रंथ है जो इस क्षेत्र की सामाजिक ताने बाने को एक जमीनी नजरिए से सामने रखता है।

हकीम अब्दुल शकूर ने इस ग्रंथ का नाम ही तारीख मेव क्षत्री रखकर यह स्पष्ट कर दिया कि मेव समुदाय का मूल आधार क्षत्रिय वंश है। वो लिखते हैं कि, “मेव कौम के रग-ओ-पै में वही खून है जो हिंदुस्तान के आला दर्जे के राजपूतों में पाया जाता है। यह लोग असल में चंद्रवंशी और सूर्यवंशी क्षत्रियों की औलाद हैं, जिन्होंने वक्त के साथ हालात के पेशे-नजर इस्लाम कबूल किया, मगर अपनी आन-बान और कबीलाई गैरत को बरकरार रखा।”¹⁷ इसके अतिरिक्त लेखक ने मेवों का संबंध महाभारत काल के पात्रों और बाद के वर्षों में यदुवंशी कृष्ण से भी जोड़ा है।¹⁸

वो मेवात की पाल व्यवस्था के विषय में लिखते हैं कि, “मेवात की बारह पालें और बावन गोत इस कौम के बारह मजबूत सुतून (स्तंभ) हैं। हर पाल का अपना एक इलाका और अपनी एक रिवायत है, जो उन्हें सदियों से एक सूत्र में पिरोए हुए है।”¹⁹

इनका पालों का विवरण मुख्य रूप से डेजिल इब्न्सन की पुस्तक से लिया गया है। इन्होंने दहंगल पाल को सबसे बड़ी और प्रभावशाली पाल बताया है और छिरकलोत पाल के योद्धा स्वभाव और उनके क्षेत्रों का भी विस्तृत विवरण दिया है।

हकीम अब्दुल शकूर दिल्ली सल्तनत के साथ मेवात के राजनीतिक संबंधों के बारे में स्पष्ट जानकारी प्रदान करता है। वह लिखता है कि, “राजा सोपर पाल, जिन्हें बहादुर नाहर के नाम से जाना जाता है, ने फिरोजशाह तुगलक के अहद (समय) में इस्लाम की तालीमात से मुतास्सिर होकर और सियासी मसलेहतों के तहत दीन-ए-हक कुबूल किया। उन्हीं के खानदान से मेवात के बड़े खानजादा घरानों की बुनियाद पड़ी।”²⁰ अब्दुल शकूर लिखते हैं कि “नाहर खान ने इस्लाम अपनाने के बाद भी मेवात की स्वायत्तता को कभी कम नहीं होने दिया।”²¹

खानवा के युद्ध (1527) में हसन खान मेवाती की भूमिका पर इस पुस्तक में बहुत मार्मिक और ऐतिहासिक विवरण मिलता है। खानवा के युद्ध के विषय में अब्दुल शकूर, हसन खान के मातृभूमि के प्रति प्यार पर लिखते हैं कि, “हसन खान मेवाती ने वतन की मिट्टी की खातिर बाबर जैसे अजीम फातेह के खिलाफ राणा सांगा का साथ देकर यह साबित कर दिया कि एक मेवाती के लिए उसका मुल्क और उसकी आन मजहब से ऊपर है।”²²

द राजाज ऑफ द पंजाब पुस्तक में मेवात का वर्णन :

लेपल हेनरी ग्रिफिन एक प्रभावशाली ब्रिटिश सिविल सेवक, राजनयिक और इतिहासकार थे, जिन्होंने पंजाब के औपनिवेशिक प्रशासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी पुस्तक *द राजाज ऑफ द पंजाब* (1870) लिखने का मुख्य उद्देश्य पंजाब की प्रमुख रियासतों जैसे पटियाला, जींद, कपूरथला और नाभा आदि के इतिहास, उनके राजनीतिक संबंधों और ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति उनकी वफादारी और नीतियों का आधिकारिक दस्तावेजीकरण करना था। ग्रिफिन ने यह ग्रंथ मुख्य रूप से प्रशासनिक और कानूनी आवश्यकता हेतु लिखा, ताकि भविष्य के ब्रिटिश अधिकारियों के लिए इन राज्यों के उत्तराधिकार, संधियों और स्थानीय प्रभुत्व को समझने में आसानी हो सके।

हजरत मौलाना मुहम्मद इलियास और उनकी धार्मिक दावत पुस्तक में मेवात का वर्णन :

मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी जिन्हें अली मियाँ भी कहा जाता था, 20वीं सदी के एक जाने माने इस्लामी विचारक, इतिहासकार और विद्वान थे, जिनका लेखन न केवल धार्मिक बल्कि ऐतिहासिक और सामाजिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। उन्होंने हजरत मौलाना मुहम्मद इलियास और उनकी धार्मिक दावत नामक पुस्तक मुख्य रूप से 1940 के दशक के अंतिम वर्षों (लगभग 1947) में लिखी थी।

इस पुस्तक को लिखने का प्राथमिक उद्देश्य तबलीगी जमात के संस्थापक मौलाना इलियास के जीवन दर्शन और मेवात के क्षेत्र में उनके द्वारा किए गए कार्यों का एक व्यवस्थित लेखाजोखा तैयार करना था। अली मियाँ मुख्य रूप से यह दिखाना चाहते थे कि किस प्रकार एक मूक क्रांति ने मेवात की लड़ाकू और अपनी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत में रची-बसी कौम को एक संगठित और अनुशासित समाज में बदल दिया। उन्होंने इस पुस्तक के माध्यम से दिखाया है कि मेवात का यह परिवर्तन केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक और मनोवैज्ञानिक इंक्लाब था, जिसने मेवातियों की पारंपरिक पहचान को एक नई दिशा प्रदान की।

मौलाना इलियास साहब ने मेवात के उन गाँवों को केंद्र बनाया जहाँ के चौधरी प्रभावशाली थे। जिनमे मुख्य रूप से फिरोजपुर झिरका, और तावडू के आसपास के क्षेत्र शामिल थे। अली नदवी के अनुसार “सबसे पहले नूह को केंद्र बनाया गया। यहाँ के लोगों ने शुरुआत में शिक्षा का विरोध किया, लेकिन मौलाना ने तर्क दिया कि बिना ज्ञान के तुम अपनी पहचान खो दोगे।”²³ सकराह और सिंगार जैसे गाँवों का जिक्र है, जहाँ प्राथमिक मदरसे (मकतब) खोले गए। इन गाँवों के लोगों ने अपनी गाड़ी कमाई का हिस्सा इन मकतबों के लिए दान किया।²⁴

निष्कर्ष :

1857 ईस्वी से 1947 ईस्वी के मध्य मेवात पर लिखे गए ग्रंथों का विस्तृत अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि इस क्षेत्र का इतिहास औपनिवेशिक ब्रिटिश शासन के हितों, नस्लीय गौरव, और धार्मिक पुनर्जागरण के त्रिकोणीय संघर्ष के बीच बुना गया है। कर्नल जेम्स टॉड की अनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान और लेपेल ग्रिफिन की राजाज ऑफ पंजाब जैसे ग्रंथ जो मेवात को रियासती राजनीति, सीमाओं के विस्तार और सैन्य विद्रोह के नजरिये से देखते हैं, वहीं डेंजिल इबटसन की अ ग्लॉसरी ऑफ द ट्राइब्स एंड कास्ट्स और डब्लू. क्रूक की द पॉपुलर रिलिजन एंड फोकलोर ऑफ नॉर्दर्न इंडिया यहाँ की अनूठी एवं जटिल सामाजिक संरचना, शपाल-गोत्र प्रणाली और मिलीजुली सांस्कृतिक पहचान को तार्किक व वैज्ञानिक आधार प्रदान करती हैं। इन ग्रंथों में मेवात को एक ऐसे शसीमांत क्षेत्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसकी नस्लीय जड़ें इस्लाम अपनाने के बावजूद अपनी प्राचीन परंपराओं में गहराई से रची बसी रही हैं।

बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में लेखन का रुख अधिक स्वयं की जागरूकता की ओर बढ़ा, जहाँ चौधरी अब्दुल शकूर की तारीख-ए-मेव क्षत्री ने मेवातियों के गौरवशाली क्षत्रिय मूल की दोबारा व्याख्या कर उन्हें एक नई ऐतिहासिक पहचान प्रदान की। इसी कालखंड में, सैयद अबुल हसन अली नदवी की हजरत मौलाना इलियास और उनकी दावत मेवात के इतिहास में एक निर्णायक परिवर्तन को दर्ज करती है, जो इस क्षेत्र के धार्मिक सुधार आंदोलनों और तबलीगी मिशन के माध्यम से आए व्यापक सामाजिक बदलावों का प्रामाणिक रिकॉर्ड प्रस्तुत करती है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि इस काल के ग्रंथ मेवात को केवल एक प्रशासनिक क्षेत्र के रूप में ही नहीं, बल्कि एक सक्रिय बागी भूमि के रूप में चित्रित करता है। जहाँ औपनिवेशिक लेखकों ने मेवात को एक अशांत और उपद्रवी क्षेत्र मानकर उसे नस्लीय वर्गीकरणों में बांधने का प्रयास किया, वहीं स्थानीय और वैचारिक लेखन ने यहाँ के निवासियों की विशिष्ट पहचान और मेलजोल की भावना को सहेजने का कार्य किया। इन भिन्न-भिन्न और विरोधाभासी स्रोतों का संगम ही मेवात के उस जटिल इतिहास की नींव रखता है, जिसने 1947 के विभाजन तक इस क्षेत्र को अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक और राजनीतिक पहचान बनाए रखने में सक्षम बनाया।

सन्दर्भ :

1. इबटसन, डेंजिल, ए ग्लॉसरी ऑफ द ट्राइब्स एंड कास्ट्स ऑफ द पंजाब एंड नॉर्थ-वेस्ट फ्रंटियर प्रोविंस, खंड 3, गवर्नमेंट प्रिंटिंग, 1916, पृष्ठ संख्या 79
2. इबटसन, डेंजिल, ए ग्लॉसरी ऑफ द ट्राइब्स एंड कास्ट्स ऑफ द पंजाब एंड नॉर्थ-वेस्ट फ्रंटियर प्रोविंस, खंड 3, पूर्वोक्त, पृष्ठ संख्या 80
3. चीनिंग, एफ. सी. गजेटियर ऑफ द गुडगांव डिस्ट्रिक्ट, 1883-84. पंजाब गवर्नमेंट प्रेस, 1884, पृष्ठ संख्या 1
4. पाउलेट, पी. डब्ल्यू. गजेटियर ऑफ द उलवर(अलवर) स्टेट, ट्रूबनर एंड कंपनी, 1871, पृष्ठ संख्या 37
5. वही, पृष्ठ संख्या 39
6. वही, पृष्ठ संख्या 40
7. जेम्स टॉड के जैन गुरु और विद्वान सहायक थे, जिन्होंने राजस्थान के इतिहास, शिलालेखों और प्राचीन पांडुलिपियों को समझने में उनकी विशेष सहायता की थी।
8. पृथ्वीराज रासो के अनुसार, जब राक्षसों के अत्याचारों से ऋषि वशिष्ठ का यज्ञ में बाधा लगी, तब उन्होंने आबू पर्वत पर अग्निकुण्ड से चार योद्धा वंशों चौहान, प्रतिहार, परमार चालुक्य या सोलंकी को उत्पन्न किया था।
9. विलियम क्रूक, इंट्रोडक्शन टू द पॉपुलर रिलिजन एंड फोकलोर ऑफ नॉर्दर्न इंडिया, इलाहाबाद, खंड-1, गवर्नमेंट प्रेस, नॉर्थ-वेस्टर्न प्रोविंसेस एंड अवध, 1894, पृष्ठ संख्या 203
10. वही, पृष्ठ संख्या 204
11. सैयद बदीउद्दीन शाह मदार 15वीं सदी के प्रभावशाली सूफी संत और मदरिया सिलसिले के संस्थापक थे। उनकी दरगाह मकनपुर (कानपुर) में है।
12. विलियम क्रूक, इंट्रोडक्शन टू द पॉपुलर रिलिजन एंड फोकलोर ऑफ नॉर्दर्न इंडिया, इलाहाबाद, खंड-1, पूर्वोक्त, पृष्ठ संख्या 204
13. विलियम क्रूक, इंट्रोडक्शन टू द पॉपुलर रिलिजन एंड फोकलोर ऑफ नॉर्दर्न इंडिया, इलाहाबाद, खंड-1, पूर्वोक्त, पृष्ठ संख्या 218
14. वही, पृष्ठ संख्या 205
15. वही
16. वही
17. शकूर, मौलाना हकीम अब्दुल, तारीख-ए-मेव क्षत्री (1940 -47), (संकलन हकीम अजमल खां) चौधरी यासीन मेव हाई स्कूल, नूंह 1974, पृष्ठ संख्या 18-19
18. वही, पृष्ठ संख्या 21
19. शकूर, मौलाना हकीम अब्दुल, तारीख-ए-मेव क्षत्री, पूर्वोक्त, पृष्ठ संख्या 52
20. वही, पृष्ठ संख्या 85-86
21. वही, पृष्ठ संख्या 87
22. शकूर, मौलाना हकीम अब्दुल, तारीख-ए-मेव क्षत्री, पूर्वोक्त, पृष्ठ संख्या 132
23. नदवी, अबुल हसन अली, हजरत मौलाना मुहम्मद इलियास और उनकी धार्मिक दावत, अनुवादक मौलाना नूरुल हसन राशदी, मजलिस-ए-तहकीकात-ओ-नशात-ए-इस्लाम, लखनऊ, 1940-47, पृष्ठ संख्या 88-89
24. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या 102